(९) [illegible]

-: [illegible] :-

(तृतीय संस्करण)

१) [illegible]

२) [illegible]

३) [illegible]

४) [illegible]

५) [illegible]

६) [illegible]

७) [illegible]

८) [illegible]

९) [illegible]

१०) [illegible]

११) [illegible]

१२) [illegible]

१३) [illegible]

१४) [illegible]

चौथा

१) नारी सुलभ भावना :-

चंदा एक भारतीय स्त्री है। वह सुशिक्षित है। वह सुशिक्षित होने के बावजूद भी वह स्त्री है। उसीने पुरुषत्व प्रतिनिधित्व प्राप्त किया तो भी नारीत्व, तथा नारी सुलभ भावना तथा प्रेम की भावना कम नहीं होगी। नारी तथा पुरुष की तुलना में नारी मन अधिक कोमल होता है। इसी कारण वह पुरुषों के पैरों में झुक जाती है। नारी भक्ति करेगी, त्याग करेगी, लेकिन समर्पण करेगी। यह उसके लिये नियति की भावना है। स्वभाव धर्म है। चंदा का मन भी प्रेम से भरा है।

" आज तुम दोनों हुये भी स्त्री स्त्री ही रहेगी। ऊपर व्याख्यान दे या ... जो ... पुरुष के लिये ... बन जायेगी ... रक्त पीना चाहेगी। लेकिन जब व्याख्यान समाप्त होने पर ... बैठेगी तो फिर वही रति, रंभा, उर्वशी, ... स्त्री या नारी ही ... और ... है - ... और ... नहीं। "

चंदा शकुंतला को अपने वैवाहिक जीवन तथा पतिव्रता वृत्ति के बारे में स्पष्ट कर देती है। नरेंद्र से प्रेम करने वाली शकुंतला उसे ... साथ साथ निभाया। ऐसा भारतीय ... मानती है। चंदा को कहना है कि उसने ... शकुंतला के लिये ही। ... उसे ... दे ... हो।

चंदा मानती है। भारतीय स्त्री धर्म भावना उसमें कूट कूट कर भरी है। उसके ... नहीं, ... या कोई ... पति के ... भारतीय नारी मन है। पति के चरणों में ही वह ... हो जाती है। क्योंकि ... विश्वास है। ... पति के चरणों में ही ... है। स्त्री के लिये ... पति का ... भार न ... जा सकता है। ... पाप है। चंदा ... मानती है। ... नहीं ... वह ... होने देना - ... भी भारतीय स्त्री ऐसा नहीं करती है। चंदा यह ...

राष्ट्रवाणी ६.५० चंदा

इसलिए केवल भारतीय नारी भावनाके अनुसार रहती है ।

२) <u>आत्म समर्पण तथा आत्म ग्लानी भावना :-</u>

स्त्रियोंमें आत्म समर्पण की भावना का प्राधान्य रहता है । चंपाको विदित होता है की, उसे शत्रुघ्नके आगे अपने अपराधोंकी क्षमा मांगकर उसकी दासी बनकर रहना ही अच्छा रहेगा । अंत गोरोंके लिये भी है । गोरोंके लिये भी नेके भावनाओंमें भिन्न व्यक्तिको वह आदर्श मानती है । उसका सन्मान तथा श्रध्दा विश्वासका नयी भावना रखती है । इसलिये व्यक्ति बड़ों अहंभाव को भूल जाता है । और " ऊपर " कैसे लोगोंकी भावना निर्माण हो जाती है । उसका मानसिक स्तर ऊँचा बन जाता है । चंपाको अपने बारेमें आत्मज्ञान तथा वास्तव परिस्थितिका ज्ञान होनेके कारण यह परिवर्तन का भाग पनि भावों सिध्दांतानुसार योग्य लगता है ।

३) <u>बुध्दीवादिता :-</u>

गजराज एवं चंपा स्वामिजीके प्रवचनों जाते रहते है। बंद करोमें वे नहीं रहते। वैसा चंपाका विचार है। ... वैसा चंपाका कहना है । चंपा स्वामीजीको मानती है । धर्म ... पर वह विश्वास करती है । प्राचीन विचार और रूढियोंको वह मानती नहीं । ... को वह ... मानती है । ... उसका विश्वास नहीं है । राजनीति शासन में वह बुध्दीवादीता बड़ी महत्व देती है । परंतु भाग्य विचार उसके खिलाफ है ।

लोगोंकी मजबूरी देखकर वह चिंता करती है । हृदय तथा मनपर अधिक नियंत्रण रखना उसे भाता है । जीवन का ज्ञान हृदयकी बुध्दीसे बनता ऐसा उसका विश्वास है । महात्मा बुध्दीमें है, जो रक्षा ... मानता है । वास्तवमें बुध्दीका महत्व जीवनमें है । वोधान स्वर्गीय अवस्थाको वह मानती नहीं । चमत्कार हर प्रक्रिया वह करती है । ...

गोबर का भेद कर नहीं मानती । क्योंकि साम्यवादी विचारधारा पर उसका विश्वास है ।

स्त्री अब घर की चारदीवारी में नहीं रहेगी बल्कि समरभूमि में वह पुरुषों के बराबर रहेगी । स्त्री का नई प्रतिवाद, रण क्षेत्र में पहुँचकर युद्ध भी करेगी । और इसलिए वह पुरुष से बाकी परीक्षा दे रही है । ज्वालामुखी ... है । उसमें हृदय की आग ... दबा नहीं जा सकती ।

प्रेम वर्णन के कारण शान्ता को रोमांसवादियों में नहीं है । अपितु अपने जीवन में सुधारणावादी दृष्टि तथा समाजभाव रखने की भी प्रयत्न कर रही है । ——१

४) निराशावादी :-

गजराज अपना किया पाप स्वीकार नहीं करता । उसके मन में द्वन्द्व चलता है । वही पाप उसे सताता है । मानसिक व्यथा गजराज पर है । ... के लिए ही उसने यह पाप किया है । यदि इन बातों को समझा नहीं सकती गजराज को यह उद्विग्नता भी ... है । कि उसने उसका क्या बिगाड़ा है इसके बदले क्यों देता है ?

" लेकिन मैं तो तुमसे कुछ पूछती भी नहीं । इधर की बातों ... तुम मेरे ... बदला ले रहे हो । लेकिन बताओ भी नहीं चाहते । मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? ... मेरा ... भी तुम जानो तो ... भी तुम मेरे ऊपर दुखना चाहोगे ?

----१

१. (राजकोट ... ७५ ...

——१

निराशावादी :-

गजराज अपना किया पाप स्वीकार नहीं करता । उसके मन में

नैराश्य भावके कारण मंदा जीवनसे मुक्ति पाना चाहती है। यद्यपि आत्महत्या का विचार [illegible] नहीं करती है। यद्यपि उसने कोई अपराध भी नहीं किया तो भी अपराधीकी भावना उसके मनमें [illegible] रहती है। अपने शरीर के [illegible] प्रेम की कारण वह निराशावादमें [illegible] जा रही है। अपने शरीर को छूकर वह किसी भी प्रकारसे शांत करती है। [illegible] किनारा भी वह करना चाहती है। प्रेमिकता यही एक कारण इसके पीछे है [illegible] उसे जला रही है। [illegible] नैराश्य [illegible] स्पष्ट होती है।

" मैं अपने को निर्दोष तो नहीं कह रही हूँ, लेकिन इसमें मेरा अपराध भी नहीं है।

[illegible] इस प्रकार स्पष्ट हुई है।

५) सौंदर्य प्रेमी :-

[illegible] को सुंदरताके प्रेम है। [illegible] [illegible] भावना [illegible] [illegible] है [illegible] सौंदर्यकी [illegible] लिये [illegible] मदद करता है। [illegible] आधुनिक विचारोंकी [illegible] है। [illegible] होनेके बावजूद भी [illegible] [illegible] करती है। [illegible] चाँदनीकी शीतलतामें [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] हुआ [illegible] [illegible] [illegible] करती [illegible] [illegible] है। [illegible] विपरीत वातावरण [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] निर्माण करता है। [illegible] [illegible] भरता है। [illegible] [illegible] है। सुंदरताके प्रेम [illegible] एक पहलू है।

" [illegible] [illegible] चाँदनी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। आज [illegible] करती हुई [illegible] [illegible] रही है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] चाँदनी [illegible] चाहिये .. "

[illegible] है। [illegible] सौंदर्य प्रेमी है। [illegible] [illegible] प्रेम है।

१) राख सोने - पृ. २६.४० पंक्ति
२) राख सोने पृ. ८१ पंक्ति
१) राख सोने पृ. ३८ पंक्ति

६) दैहिक प्रेम :-

मानव अपनी भावनाओं विविध प्रकारसे व्यक्त करता है। आपकी दैहिक अथवा दबी हुई भावनाओं का [illegible] करता है। [illegible] परिस्थिति जब [illegible] है। मानव भावनाओं का [illegible] देता है। [illegible] है। [illegible] भावना की पद [illegible] अपराध है। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] दिखाती है। [illegible] करती है। [illegible] है। [illegible] है। यह प्रेम भी [illegible] है।

" [illegible] नहीं

[illegible] दैहिक प्रेम [illegible] जरूर है। [illegible] के कारण [illegible] नहीं [illegible]।

७) धार्मिकता :-

[illegible] रखता है। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] प्रेम है। [illegible] शास्त्रों [illegible] मानती है। यथारथतया: [illegible] धर्म [illegible] शास्त्रों [illegible] है। [illegible] विश्वास नहीं होता। [illegible] धर्म शास्त्रों मानती है। [illegible] भावना, [illegible] है। [illegible] विश्वास है। शास्त्रों [illegible] मानती है। भारतीय नारी [illegible] प्रेम करती है। [illegible] मानती है [illegible] नहीं [illegible] शरीर [illegible] नहीं। [illegible] धर्म के [illegible] है। [illegible] है।

[illegible] परमेश्वर मानती है। [illegible] है। [illegible] भावना [illegible] है। [illegible]

मानी. जहाँ समझानेका प्रयत्न चंपा करती है । शीलकी [illegible] बाजार में नहीं [illegible] है । [illegible] जीती है । जीवनको [illegible] परायहू मानती है । [illegible] बाजारके पंक्तियोंमें चंपा है । [illegible] कारण वह धार्मिक [illegible] और मूल जाती है । [illegible] नया [illegible] देती है ।

८) <u>स्वाभिमानी वृत्ति :-</u>

चंपा [illegible] राजकुमार एक कोठेके वातावरणमें [illegible] राजकुमार [illegible] बाजारकी [illegible] लिये [illegible] रखने लिये [illegible] है । [illegible] अपनी इच्छा - [illegible] और [illegible] मनोवृत्तिके [illegible] चंपाने [illegible] लिये कहा है । यह स्पष्ट [illegible] है । चंपा [illegible] स्वाभिमान वृत्तिकी होनेके कारण कहती है । कि [illegible] जीवनको [illegible] है । चंपा [illegible] जीवनको [illegible] नहीं है । राजकुमारके रोकनेकी [illegible] वह [illegible] नहीं करती क्योंकि [illegible] वह [illegible] नहीं है । वह [illegible] राजकुमारकी [illegible] नहीं [illegible] वह [illegible] करती है । कि वह उससे प्रेम नहीं [illegible] करती है । चंपा आधुनिक नहीं है । और [illegible] फिर वह आधुनिक वृत्तिकी होनेके कारण वह [illegible] स्वीकार नहीं कर सकती । और राजकुमारको [illegible] है । यहाँ चंपाका स्वाभिमान है ।

" [illegible] और [illegible] अपना [illegible] पर [illegible] राजकुमारको [illegible] और [illegible] [illegible] आपकी [illegible] छोड देना अपने शरीरको - अपने हृदयको और अपनी आत्माको --- १

[illegible] आधार स्वाभिमानी [illegible] इस प्रकार [illegible] है । चंपा [illegible] करती है । [illegible] करती है ।

[illegible] उन्होंने आत्महत्या कर ली । नहीं [illegible] । --- २

१) राजयोग पृ.२३ [illegible]

२) राजयोग २४ [illegible]

५) [illegible] :-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

की [illegible] रखता है। [illegible] एक [illegible] महिला जो जीवन जीता है। उसी प्रकार [illegible] जीवन होता है। यह प्रकाश धर्म है। क्योंकि प्रकाश फैल जाता है। इसीके [illegible] तथा [illegible] भावना होती है। लोगोंके शारीरिक [illegible] सहन करती है। आर्थिक कठिनाईयोंकी [illegible] [illegible]। अन्य [illegible] परिस्थितिके कारण निर्मित होती है। [illegible] का परिणाम है। [illegible] [illegible] है। [illegible] की ओर [illegible] है।

१०) अंतिम कु लिक [illegible] :-

महेंद्र [illegible] उसका [illegible] है। जो [illegible] देती है। [illegible] उसका [illegible] हुआ है। [illegible] नहीं [illegible] है। कई आलोचकोंने [illegible] किया है। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है।

" लेकिन [illegible] है [illegible] नहीं [illegible] है [illegible] रही। ----"

[illegible] एक दुर्लभ [illegible] [illegible] हो [illegible] है। [illegible] होता है। [illegible] है। [illegible] गई है।

राज योग :- ६.१२ [illegible]

....

११) प्रेम भावना :-

चंपा पुरुषोंसे प्रेम करती है । त्योंकी नरेंद्रको वह पा नहीं सकी । शत्रुघ्नसे उसे जबरदस्तीसे विवाहबद्ध होना पड़ता है । उसके अन्दर अत्याचार होनेसे तब सिर्फ पुरुष उसे प्रेम नहीं करता पुरुष जातीको वह कोसती है । उसका अपना पूर्वानुभव सही है । शत्रुघ्नको चंपाने पति रूप माना था पर वह उसे [illegible] नहीं पाया नरेंद्र द्वारा वह प्रतारित हुई है । तथा वेश्यालय बनाई है । चंपा का एकान्त [illegible] गई न वह शत्रुघ्नकी रही ना चले नरेंद्रकी । यही जीवन चंपा के कलंक है । इसी कारण वह पुरुष वर्गोपर नहीं विश्वास भी करती है । चंपा स्त्री सुलभ भावनाओंसे भरी है । स्त्री की भावना [illegible] है । तो वह प्रेम तथा जलन प्रतिशोध [illegible] करती है । [illegible] सिद्धांतानुसार उसका यह वर्णन संतुलित लगता है ।

स्त्रीके प्रति संदेह [illegible] रखने वाले पुरुष [illegible] वह [illegible] करती है । जो स्त्री के [illegible] संदेह भरी [illegible] रखते है । स्त्री [illegible] अपमान करते है । उसका हृदय [illegible] है । [illegible] उसके [illegible] देती है । वह शब्दोंमें [illegible] कहती है ।

" स्त्रीयाँ [illegible] होती है । [illegible] होती है, [illegible] स्वामीके [illegible] है । [illegible] है । ऐसी ही पुरुष जाती है । पुरुषका काम है । स्त्री का विश्वास करना और उसके हृदयको तोड़कर [illegible] और [illegible] देना । - - - - १

पुरुषका [illegible] और [illegible] स्त्रीका विश्वास करना [illegible] की [illegible] स्त्रीसे [illegible] पर [illegible] और [illegible] और [illegible] उसके हृदयको [illegible] देना " - - - - २

इससे स्पष्ट [illegible] है, शत्रुघ्नके प्रति प्रेम भावना है । [illegible] एककार प्रेम करती है । [illegible] रखती है । और [illegible] करती है [illegible] धारती रखती है ।

१) राजयोग:-पृ. ४० चंपा
२) -"- पृ. ७३ चंपा

३३) मानसिक [illegible] :-

नरेंद्र [illegible] राजकुमारके [illegible] अपनी [illegible] है । नरेंद्र की पुराना प्रेम [illegible] की [illegible] है [illegible] पुराना प्रेम भूलने के लिये [illegible] कर देता है । [illegible] अपनाने [illegible] विचार [illegible] करता है । नारी [illegible] परिवर्तित [illegible] है । [illegible] विश्वास नहीं है । [illegible] : [illegible] नहीं है । [illegible] : [illegible] निराशा है । [illegible] भी [illegible] नहीं सकती [illegible] राजकुमारके मानसिक [illegible] में [illegible] है । राजकुमार [illegible] आपस [illegible] समझौता करके [illegible] नरेंद्र [illegible] नहीं [illegible] । नरेंद्र राजकुमारके [illegible] करने के लिये [illegible] है । और [illegible] राजकुमारके [illegible] । मानसिक विक्षिप्त अवस्था [illegible] आदर्श स्त्रीके [illegible] रहता है ।

" [illegible] मैं [illegible] [illegible] और नारी [illegible] नहीं [illegible] का [illegible] है ।

१४) [illegible] :-

नरेंद्र [illegible] अपनी [illegible] से [illegible] विचार करता है । [illegible] कि [illegible] को [illegible] [illegible] स्वाभिमान [illegible] है । [illegible] है [illegible] विरोध भी [illegible] है । [illegible] का विचार नहीं [illegible] हुई । [illegible] [illegible] है ।

" [illegible] हूँ । [illegible] हूँ । [illegible] का [illegible] नहीं [illegible] हुये [illegible] है ।

[illegible] निराशा [illegible] है [illegible] , [illegible] नहीं।

पी.कली नारायणोंकी कारण तरी बहुत ऐसे कलोंके कारण [illegible] चंपाकी भावनाये [illegible] गई है। परिस्थिती पर चंपाने किय प्रकाश डाल दिया है। [illegible] विचार है कि, [illegible] जीव पुरुषका नाश करेगी पुरुष [illegible] [illegible] का नाश करेगा। यह विरोध कायम रहेगा तो चंपा, [illegible] पुरुषके आगमनाका विचार [illegible] करती है। यहाँ चंपा [illegible] पुरुष दोनों एक दूसरेका विनाश करते रहेंगे ऐसा कहती है। क्योंकि चंपा का जीवन [illegible] बर्बाद किया है। इसके प्रतिशोधकी भावना है इसी कारण चंपा कहीं [illegible] [illegible] लिये राजी नहीं है।

२४) <u>मरण भीति</u> :-

आपको [illegible] अनुसार [illegible] परिस्थितिसे असंतोष एवं असंतुलन कर कहीं पलायन [illegible] [illegible] है। निराशावादी बन जाता है। [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] विचार [illegible] नहीं कर पाता [illegible] [illegible] मरण [illegible] [illegible] है। मृत्यु को अपनाते। [illegible] [illegible] होता है।

चंपा भी इसी स्थितिसे [illegible] गई [illegible] आत्महत्या करना चाहती है। [illegible] जीवनका अंत है। [illegible] [illegible] [illegible] भरे जीवनकी [illegible] यह मौन वाणी है। चंपाके मानसीक [illegible] [illegible] [illegible] बैठ [illegible] [illegible] है। क्योंकि जो अपराध किया नहीं गया है। उसको चंपाने [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] तथा [illegible] प्रवृत्ति [illegible] मानसीक बोध [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

" तो हमें [illegible] [illegible] का [illegible] करेगी [illegible] [illegible] - - - १

स्पष्ट है कि चंपाने आत्महत्या करनेके सिवाय [illegible] कोई [illegible] [illegible] [illegible] जो उसके मरण प्रवृत्ति का [illegible] [illegible] [illegible] है।

१) [illegible] :- पृ.[illegible] अं.

-: नारीरत्न :-

(१०) उदाहरणार्थ

१) भारतीय नारी
२) नारी नारी के प्रति
३) नारी कुसुम
४) स्पष्ट वक्ता
५) सत्यवादी
६) वात्सल्यवादी पुत्री
७) स्वतंत्र विचार वाली
८) प्रभावी वक्ता
९) मानवता वादी
१०) प्रेम भावना
११) क्षमापरता
१२) बुद्धिमत्ता
१३) मानसिक प्रबलता
१४) देश भावना
१५) स्वभाव मधुरता
१६) सत्य संस्कृति
१७) देशभक्ति
१८) वैराग्यवाद
१९) पुर्नविवाहपर विचार
२०) अंध विश्वास
२१) दृढ निश्चयी
२२) समाजोद्धार
२३) स्वाधिकारों की प्रवृत्ति
२४) स्वभाव वैशिष्ट्य
२५) बालक विरहित तथा केवल वात्सल्यमिश्रित प्रेम
२६) आधुनिक विचार वाद
२७) सत्प्रवृत्ती

मायावती

(१) भारतीय नारी :-

मायादेवी पूर्ण रूपसे भारतीय नारी चित्रित होती है। वह अपने पतीका स्वास्थ्य चाहती है। उसके लिये कोई दुःख है न हो यह चाहती है। बातमेंही कई व्रत वैकल्प रखती है। कभी कभी, निर्जल, निराहार उपवास रखती है। फिर इन बातोंके पीछे केवली हेतु है वह है उसके पती को कुछ ना हो जाये। भारतीय नारी-स्वरुपही चाहती है कि कुछ हो उसके पतीका स्वास्थ्य ठीक बना रहेगे रहे। इसीकारण अंधविश्वासोंको अपनानेके बावजूद भी वह भारतीय नारी के समान व्रत वैकल्प करती है।

" न मालूम क्यों मुझे इस बातकी आशंका हो उठती है कि, कहीं उनकी कोई बुराई न हो जाय। मैं बातमें सभी, व्रत रखती हूँ। स्त्री पुरुषकी मंगल - कामना से व्रत रखती है - निर्जल निराहार कभी कभी पोल दिन बीत जाते है। " १

मायावती चाहती है कि, वह देव केवल अपढ गँवार हिंदू स्त्री बनी रहे। जो पुनर्जन्म और कुसंस्कारों पर विश्वास रखे।

मायावती अंतमें इस नतीजेपर आगई है कि, वह भारतीय नारी ही बनेगी। क्यों कि उसका विश्वास है कि, भारतीय नारी की इच्छा ही पतीको समर्थ रख सकती है।

" मैं जिस समय मरने लगूँ, केवल एक अपढ, गँवार हिंदू स्त्री रहूँ। - १

मायादेवी राघव नरके सामने स्पष्ट करती है कि, वे दोनो एक साथही मरेंगे। और जियेंगे तोभी एक साथही जियेंगे।

आधारीत पृ.४२, ४३ मायावती.

इस बातपर प्रकाशचंद्र विश्वास नहीं करता। वह मायावतीसे पूछता है कि क्या वह सचमुच प्रकाश चंद्रसे प्रेम करती है। और मुंशी वह प्रकाश चंद्रसे प्रेम करती है। सुनकर अपना सिर उसके पैरपर सिर रख देती है। और सिसक सिसक कर रोने लगती है। यह उसका पर्याप्त भारतीय नारी अपने पतीके चरणोंमेंही स्वर्ग मानती है।

* तुम सचमुच मुझे प्रेम
  करती हो? — २

(२) नारी जातिके प्रति आदरभावना :

मायावती आधुनिक सभ्यता तथा विचारधाराको माननेवाली युवति है। साथही वह मानती है, कि पुरुष एवं स्त्री कोईभी इसमें अलग नहीं है। पुरुषत्व की रक्षा पुरुष नहीं बल्कि स्त्री करती है। क्योंकि जिसमेंकी नारी औरतोंको तथा बच्चा या पतीका पालन पोषण करती है और वह दूसरोंकी सेवाके लिये अपना जीवन समर्पित करती है। यह उसका स्वभाव धर्म है। यह निसर्ग नियम है। इसी कारण नारी महान है।

वास्तविक अर्थमें मायादेवीभी नारी है। नारी नारीकी महिमा मान्य करती है। वह उसके मनमें बडप्पनका प्रतिक है।

* पुरुषत्वकी रक्षा पुरुषसे नहीं स्त्री के आधीन है। हम इसलिये पैदा हुई थी - हमें पैदा करनेमें प्रकृतिका यही मतलब है। — — १

मायादेवी औरभी सभ्यतासे नारी महिमा विचार व्यक्त करती है। जहाँ कहीं पुरुषत्वका पराजय होता है, वहाँ उसकी विजय नारी ही करा देती है। क्योंकि उसकी जिम्मेदारी, स्त्री पर होती है। पर यह लोगोंमें रखना आवश्यक है, कि हर पुरुषको बडा करनेमें नारीका हाथ होता है। इतनी महान नारी है।

* जहाँ कहीं पुरुषत्वका पराजय होगा, उसकी जिम्मेदारी किसी न किसी

स्त्रीमें

2) आंतरिक्ष पृ.७३ प्रकाशचंद्र

१) आंतरिक्ष पृ.९२ मायावती

क्यों स्त्री पर होगी।" --२.

मायावती नारी मनको समझ सकती है क्योंकि स्त्रीको सिर्फ जैसे हुये पुरुषोंने देखा है वे उसके मनकी व्यथा नहीं जानते व उसको विचार करते हैं। इसके गहराईतक मायावतीने शोध किया है।

" नारी जातिका पुरुषके विचार किया है? पुरुष इतना सजग कभी नहीं हुआ। स्त्रीको जाने उसने रोते देखा था जैसे। स्त्री की कभी कोई समस्या हुई ही नहीं। 3.

पुरुषोंने नारी मनको कभी समझौता नहीं देना मात्र खिलौना समझा है।

(३) नारी सुलभ भावना :-

राधाकृष्ण मायावतीसे पूछ बैठता है कि पत्नीकी अस्वस्थता, उन्हें मालूम थी। पत्नीकी अस्वस्थताकी खामियाँ उन्हें मालूम है। तथा इसकी समझ होनेके बावजूद भी उसने पुनःसे विवाह किया था। मायावती निरंतर असमर्थ है कि वह इसका जवाब नहीं दे सकती। राधाकृष्ण बारबारही कहता है कि, मायावती इस बातका जवाब दे। मायावती का स्पष्ट कहना है कि,

" यही तो बुराई है। स्त्री पुरुषको क्यों चाहती है?

स्त्री पुरुषको क्यों चाहती है? इस विषयपर तर्क नहीं किया जा सकता।

नारी प्रेम करना जानती है। वह किसी पुरुषका आधार चाहती है। उसे प्रेमकी देती है पर वह प्रेम क्यों करती है। इसका जवाब नहीं दे सकती। क्योंकि वह तो उसकी नारीसुलभ भावनाका प्रतीक है।

वह कहती है कि ---

"मुझे किसी साथी की जरूरत थी। पुरुष की नहीं। सेवा करना मैं चाहती थी, कर रही हूँ। स्त्री को अवसर मिल सके कि वह पुरुषकी सेवा करे। २

**

आधीरात पृ.११८ मायावती

आधीरात पृ.४० मायावती

स्त्रीका धर्म सेवा करना है। मायावती स्त्रीही है। और सेवा करना नारी सुलभ भावना है। जिसे वह प्रेम करती है। उसकी सेवा करनेमें उसे आनंद आता है।

प्रकाशसिंह मान लेता है कि उसने मायावतीसे विवाह किया था। और मायावतीका भावनात्मक कथन है कि हर स्त्रीकी अपने जीवनमें सुहाग रात होती है। और हर स्त्री उसी रातका इंतजार करती है। मायावती नारी है। जो अपने पतीके सुहाग रातका रास्ता देखती है। और सुहाग कायम रखती।

" आज की रात मेरी सुहाग रात है ? " - - - ३

(४) स्पष्टवक्ता :-

मायावती तथा राजकुमारमें वार्तालाप होता है और राजकुमारमें नाक स्वभावके कारण उसे गुस्सा आ जाता है। वह जानकर है कि दोनोंभी उपेक्षक है। वासीलिक हैं। एक दूसरेका जानकर है। दोनोंभी उसकेही ठेकूर हैं। प्रकाशसिंहके बारेमें वह अच्छा मत प्रदर्शन करती है। क्योंकि उसके बारेमें उसके आत्मयुक्त प्रेम है। राजकुमारका कहना है कि प्रकाशसिंह शायद उसके लिये घातक बने। तब वह नाक रूपसे कहती है कि उसके लिये वह घातक नहीं बल्कि राजकुमारके लिये जरूर घातक रहेगा। क्योंकि माया राजकुमारके स्वभावको ठीक प्रकारसे जानती है। तथा परिचितभी है। जनक माता सिधि पडी है। निजात्मक जाकर आनेसे परिणामी सफलताका जरूर है। इसीकारण काफी स्पष्ट रूपसे बात भी वह पेशिश करती है।

" मेरे लिये नहीं - आपका स्वभाव मैं बहुत दिनोंसे जानती हूँ। मुझे इस बातकी जरूरत नहीं मालूम हुई कि इन्हेंभी सावधान कर दूँ। मेरा और आपका जीवन प्रायः एक सा रहा है। - - - " १

मायावती प्रकाशसिंहसे स्पष्ट करती है कि,प्रकाशसिंहके पास कोई आकर्षकी बात नहीं रहनेके बावजूदभी वह उसकी ओर आकर्षित बन गई। क्योंकि प्रकाश

आधीरात पृ.११५ मायावती

चंद्रने अपनी कल्पनामें स्त्रीकाही विचार किया है। प्रकाशचंद्रने अलग अलग उसकी स्त्रीभी उसने देखी होगी। प्रकाश चंद्रसे वह स्पष्ट रूपसे कहती है कि, उसकी ओर नहीं आयी बल्कि प्रकाशचंद्रही उसके ओर आया वैसे उसके पास कोई आकर्षण नहीं है। इसका स्पष्ट ज्ञान उसे है। मायावती काफी स्पष्टवक्ता है।

" तुम स्वयं चले आये। मैंने तुम्हारे ऊपर कोई आकर्षण नहीं किया था। तुम अपनी अपढ़ गँवार, कुरूप स्त्रीसे असंतुष्ट रहे। तुम कल्पनामें निरंतर कोई सुंदर, शिक्षित, संस्कृत स्त्री चाहते थे, जिसके साथ तुम रहते। " — — २

मायावती राघवचरण और प्रकाश चंद्रकी तुलना तथा वैशिष्ट्य दोनों बातोंका स्पष्टीकरण करती है। प्रकाशचंद्र का साहस और विवेक महत्वपूर्ण है। राघवचरण का विवेक और साहसका दंभ व्यर्थ है। मायावती राघवचरणको स्पष्ट कहती है कि वे सिर्फ औरोंको उपदेश देते हैं। बल्कि खुद उल्टा आचरण करते हैं। वह उन्हें ठीक तरहसे जानती है। मायावतीकी स्पष्टवक्तापन-सी काफी स्पष्ट दिखती है।

" आपके विवेक और साहस का दंभ व्यर्थ है। आप स्वयं इतने बुरे रहे हैं कि दूसरोंको उपदेश देनेका आपको कोई अधिकार नहीं है। आपका साहस और आपका विवेकमैं तो जानती हूँ न ? " — — ३

इसपरभी वह कहती है कि राघवचरण खूब बुरे हैं। उनका आचरण ढोंग है। अच्छा हुआ कि, वह उनसे सावधान रही। इसका अर्थ है कि सजगतासे जीवनमें अर्थ निर्णय कर सकी। कौन बुरा है कौन अच्छा है। इसका स्पष्टरूपसे वह साफ साफ निवेदन करती है।

"आपके आतंकका जो ढोंग बना रखा था। आपकी वह सारी चिंता उनके लिये तो नहीं — — मेरे लिये थी।—आपसे मैं तो सावधान रही — लेकिन उनके लिये — आप उनके हित रहे हैं। मैंने उन्हें कभी भी प्रेम, नहीं किया। कमसे कम आप इस प्रकार तो न करें। " ४ "

आधीरात पृ.१२२ मायावती

राधाकृष्णसे वह क्रोधित होकर कहती है कि राधाकृष्ण झूठ मूठकी बातों का ढोंग करके मुझको अच्छा साबित कर देना चाहता है। यही बात मायावतीको खटकती है। राधाकृष्ण को दूसरोंके बीचमें पड़नेकी आदत वह स्पष्ट देती है। और अपने पूरे इतिहासकी ओर देखनेके लिये कहती है।

"मुझे आशा थी की आप कभी न कभी होशमें आयेंगे और अपना रास्ता बदल देंगे। दूसरोंके इतिहासमें आप व्यर्थ पड रहे हैं। अपना इतिहासही आपके लिये काफी नहीं है क्या? "

राधाकृष्णके छिपे आलोचनाओंमें तथा सारे करतूतोंसे मायावती ठीक तरहसे परिचित है। राधाकृष्णकी कमी और मनके भीतर बैठी ज्वालामुखी छिपाते रहे। ऊपर एक और अंदर अलग ऐसा व्यक्तित्व राधाकृष्णका है। वह मायावती जान गई है। और इसी कारण स्पष्ट रूपसे वह उसे प्रकाशमें लाना चाहती है। ताकि राधाकृष्णकी कारनामें खुल जाये।

" आप उन लोगोंमें है, जो ऊपर कर तो कभी कुछ कहते नहीं - लेकिन जिन के मनके भीतर ज्वालामुखी छिपा रहता है। आपसे - केवल आपसे बचने लिये मैं इनको यहाँ लिवा लाई थी। और इस तरह मैं बच गई। " -- ६

मायावतीने आगे चलकरतो राधाकृष्णको स्पष्ट रूपसे कहा है कि, राधाकृष्ण जी, अपने घरके,घरमें जगह नहीं है, वे तो दूसरों के प्रशंसक होते है। जिन्होंने अपना घर नहीं सुधारा वे औरोंको सुधारने चले। इसपर मायावती का क्रोध व्यक्त होता है।

" ऐसा उचित होगा,हम लोग जिनके होंगे,वह जायेंगे आपने घरमें जिन्हें जगह नहीं होती वे ही दूसरोंके प्रशंसक होते हैं -- ७

आधी रात पृ.१२४ मायावती

(५) तत्त्ववादी :-

राधाकृष्णकी मायावती कहती है कि पुरुषार्थको जीवनमें समझना जाना चाहिये। कीर्ति और सात्त्विक कीर्ति दोनोंमेंसे एक मिलना आवश्यक है। एकको मिलानेके लिये दूसरेको छोड़ना पड़ता है। और सामंजस्य करना पड़ता है। जैसे कि सोनेको लूट जानेके भयसे कोयलेमें रखा जा सकता है। जब वह सोना कोयलेसे दूर रखा जायेगा तो कोई न कोई जरूर लूट लेगे। इसलिये दोनों बातें एक वक्तपर नहीं होंगी। एकको लेना पड़ेगा।

" सोनेको लूट जानेके भयसे कोयलेमें रखा जा सकता है। कोई बुराई नहीं। लेकिन सोना है वही इसके लिये। जब कभी वह कोयलेसे अलग किया जायेगा उसके लूट जाने का भय पैदा हो जायेगा। -- १

मायादेवीका कहना है कि, पश्चाताप आदमीका पाप धो डालता है। परमेश्वरसे पापकी माफी माँगना गलत बात है। क्योंकि किस्मतने कभी किसीको माफ नहीं किया है। वह किस्मती वक्त अनन्तकाल तक हमेशा-वैसी ही रहती है।

इस पछतावे का अब क्या फल है? पछतावा पाप धो डालता है। सबकुछ करके अपने खुदासे माफी माँगते हैं। -- २

मायादेवीका विचार है कि, जो बिछड़ गये हैं उनकी आशा रखना अयोग्य है। राधाकृष्णकि वह साफ कहती है कि आनेवाले नये व्यक्तियोंसे सावधान रहना आवश्यक है ताकि वे न बिछडे। इसीसे जीवनमें खुशी मिल सकेगी।

मायादेवी जीवनमें सुंदरता एवं अच्छाई देखनेका विचार व्यक्त कर रही है।

"जो बिछड़ गये हैं उनकी आशा न कीजिए जो आनेवाले हैं उनसे सावधान रहिये - वे न बिछडे। खुशी या आपको इस जीवनमें सुविधा नहीं मिल सकती।" - ३

मायावती जीवनमें सारी तरह मोह व्यर्थ है किन्तु राधाकृष्णको कहती परिस्थितियोंसे मनुष्य बनता है या बिगड़ता है। अच्छा बनता है या बुरा भी हो सकता है। कभी कभी मनुष्य बहुत छोटा बन जाता है। जो उसे नहीं

१ आखीरात पृ.४८ मायावती -

बनता है। ऐसा क्यों होता है? इसीलिये कि जीत एवं हार ये निरर्थक है।

" इस जीत और हारका मोह व्यर्थ है। कोई अगर सामाजिक मर्यादा तोड दे तो वह बुरा या अच्छा भी हो सकता है। यह तो परिस्थितिपर निर्भर है।"

मायावती राजकमल सेठ के दूसरे समीप हैं तथा वार्तालाप चलता है। पक्षी क्यों फेंक दी? इस प्रकार प्रश्न मायादेवी के पास नहीं है। राजेंद्र सबको इस बातकी उत्सुकता है कि वह क्यों फेंक दी गई होगी। मायावतीका कहना है कि, पक्षीसेही जीवनका नाश होता है। स्वाभाविकता बिगड जाती है। एक एक क्षण जीवन या एक एक युग है। इसमें नीरसताभी इसी पक्षीके कारण आती है।

इस सबके पीछे मायावती को अपने जीवनमें आयी नीरसता का भी सार अनुभव कष्ट है। जिसका मानस शास्त्रीय अशुभ परिणाम यह हुआ कि मायावतीके जीवनमें निराशावादी वृत्ती बढ गई।

" पक्षीसे जीवनकी स्वाभाविकता बिगड जाती है जी। इसमेंकी बिलकुल नहीं जानकारी व्यर्थ है। प्रकृतिकीपक्षी एक तो नकली बिगडती रहती है, इसके अलावा यह भौतिक दुनियाका नाश कर सबको नीरस कर देती है। -- ५

मायावती दूसरोंसे कहती है कि कई एक बार ऐसाभी होता है कि, जीवनमें विषमतायें काफी रहती है कि, कई एक बार ऐसाभी होता है कि, जीवनमें विषमतायें काफी रहती है। जीवनके विचारकी कोई सीमा नहीं रहती। जीवनमें कुछभी समयपर कुछभी हो सकता है।

" जीवनमें ऐसी विषमताएँ प्राय : आ जाती है। इसके पिछाकी निश्चित सहज नहीं है। "

साथही वह यह भी कहती है कि "मनुष्यके भीतर बाहर सब कहीं" ऐसी बातें हैं। जिसका न होना - लेकिन वे हो जाया करती हैं। " -- ७

निष्कर्षका अर्थ तरहसे समझ गया है कि जीवनकी कई ऐसे बातोंके साथ सिर्फ समझौतेके सिवा दूसरा कुछ नहीं हो सकता। जो बातें होना हैं होती जाती है। इसे कोई अन्य पर्याय नहीं है।

आधीरात पृ.५८,मायादेवी,पृ.८१ आधीरात मायावती

मायावतीने कई ऐसे अनुभव जीवनमें किये है जिसके कारण उसको जीवनपर भी भरोसा नहीं रहा। संदेह भरी दृष्टीसेही वह देखती है। क्योंकि कलियुगमें संदेहके सिवा कुछ और हो नहीं सकता।

"अब तो मनुष्यका सबसे बडा बल सबसे बडा भरोसा संदेह हो रहा है।"

मायादेवीका कथन है कि जीवनमें आपत्तीके संस्कार बदल गये है। जिसका नाश करता है। मानव बंधन टूट जानेपर पशुमात्र बन बैठा है। संस्कारसे कारणही मानव स्वभाव पूर्ण रूपसे बदल गया है।

"संस्कार बदलनेसे स्वभावतो बदलही जाता है। मनुष्यका संस्कार जब तक नहीं बदलता, उससे कोई बुराई नहीं होती।" --- ९

प्रकाशचंद्रसे बातें करते वक्त मायावती आत्माकी महानताके बारेमें महत्व स्पष्ट करती है। उसका कहना है कि, वह इतनी छोटी चीज नहीं है। अगर आत्माका महत्व तुम जानते तो तुम मानव नहीं रहते देवत्वको और बढ जाते।

"इसलिये कि वह इतनी हलकी चीज है। जिस चीजकी तुम उसे आशा करते थे और शायद जिसके लिये तुम्हे निराश होना पडा, वह तुम्हारी आत्मा थी नहीं ---

अगर तुममें उतनी भयंकर वासना होती अगर तुममी वही नहीं जो कोई भी पुरुष जवानीमें चाहता है, तो तुम देवता होते" --- १०

प्रकाशचंद्रको बुरा लगता है कि मायावतीका प्रेम वह पा नहीं सका। और उसे आपपर वह तरसता है। उसका जीवन बिगाड दिया इसका उसे बुरा लगता है। तब मायादेवी उसे कहती है कि तुम जो हो उससे औरभी अधिक बन सकते हो। पर तुम उसको समझ नहीं पाये। जरा उसको ठीक तरहसे देखो, तुम समझ पाओगे कि तुम्हारी भिन्नता संसारके अन्य लोगोंसे भिन्न है। लालसा की पूर्ति अगर तुम करते तो मर जाते।

मायादेवी की कहना है कि, शरीर तथा वासनाके अंदर जो विजय पाता है। वही सच्चा मानव है।

आधी रात पृ.८३,८२ मायावती, पृ.९० मायादेवी

जब माधवको निराशावाद आता है। प्रेममें असफलता आती है। जीवनका अर्थ निकल जाता है।

" हमारी तो जन्मकी भूख का फल हमें जन्मजन्मांतरतक भोगना पड़ता है। हमारी आशा है कहाँ? हमारी मुक्ति होगी कब? - - - १

मायावतीने विवाहमें शिक्षा जरूर ली है पर वह शिक्षा उसके लिये लाभकारी नहीं रही। बल्कि नये विचार उसके लिये घातक बन गये। जीवनमें परिणामतः उदासी, कुंठा, अनिश्चितता व्यर्थ का परिचय उसे मिला। स्त्रीयोंका उद्धार वह कर सकेगी ऐसा उसे विश्वास था पर वह झूठा निकला। यहाँ स्त्री - पुरुषका समान अधिकारका ढूँढ़ही गलत है। जो दांपत्य जीवनको बर्बाद कर देता है।

" नये युगके नये - प्रयोगोंका परिणाम अच्छा नहीं होगा। मेरे लिये तो अच्छा नहीं हुआ। मैंने चाहा यहाँ स्त्रियोंके लिये आदर्श बनना। और नई नई रोशनीकी चमक - दमकमें आज अनुभव हो रहा है, मैं अंधी हो गई थी। - - २

मायादेवी पश्चिमी सभ्यताके प्रभावी जरूर है पर अब पश्चातापभी कर रही है।

मायादेवी सही रूपमें पत्नी बनना चाहती पर वह बन नहीं पायी। क्योंकि उसके प्रेममें जो कोई पड़ा, उसे तनावके सिवा कुछ मिला ही नहीं। वह कभी किसीको पतीका सुख दे नहीं पाई। पत्नीत्वका सुखकी कल्पनाभी उसने नहीं की। इसपर मायावतीको पश्चाताप होता है। उसके मनकी इच्छा अधूरी रही। मनकी अतृप्त अवस्थाएँ ही उसे सताती है। और मनही मनमें उसकी पत्नी न बननेका दुर्भाग्य मिलनेसे पछताती है।

"मेरे पास और बाकी क्या? मैं तुम्हें यहाँतक लिवा लाई - पत्नीत्वके सुख के लिये नहीं - उसका अधिकार मुझे नहीं था।" - - ३

आधी रात पृ.८७ मायावती

" अपने जीवनको मिटा देते,कमसे कम संसारसे तुम्हारी जो भिन्नता है उसे मिटा देते और तुम इस बातके अधिकारी होते कि सृष्टिके समानांतर तुम्हारी सृष्टि भी चलती रहे। और फिर तुम्हारा जीवन चिरकामी कहाँ? वासना की पूर्ति तो मृत्यु है। " --- ११

मायादेवीका विश्वास है कि, मृग की तरह जीवनमें अर्थ खोजना गलत है। वासनासे परे जब तुम जाओगे तब ही जीवनमें आनंद पा सकोगे। अपनी आत्मा तथा विश्वासका रहस्य खोलकर देखो तुम्हें नई शक्ति मिलेगी। नया जीवन तथा जीवनदान मिलेगा।

" उस सौंदर्यको जीवित करे, जो मर चुका है। या मर रहा है, जो हमारी चेतनाको जगा कर हमारे जीवन और जगतको रहस्यमय करे। --- १२

मायावतीको अपनानेकी तैयारी प्रकाशचंद्र करता है। मायावती अपने पत्नीकी सुहाग रातके बारेमें सोचती है। पर उसे मालूम है कि, वह अवश्य खत्म होनेवाली है। प्रकाशचंद्र उसका प्रेमी उसे छोड़के वक्त उसका मन बोझीला होता है। तब वह सुरपत एवं कुंवरसे विवाहकी विचार करती है।

"मनुष्यका जन्म केवल दुःख उठानेके लिये होता है,और जब उसके सुखके दिन आते है तब तो वह लूट लिया जाता न है। - १३

जीवनका यह चक्र अविरत चलता रहेगा दुख सुखभी चलता रहेगा।

(१८) वास्तववादी दृष्टी :-

मायादेवी वास्तविकताको अपनाती है। उसके मतानुसार जो प्रकृत है, नैसर्गिक है उसको अनैसर्गिक रूप नहीं दिया जाता न उसका प्रचार किया जा सकता। प्रकृतीके नामपर कई गलत काम हो रहे हैं जिन्हे मायादेवी पसंद नहीं करती। वह जीवनका असली रूप,सच्ची भावनासे अपनाती है।

" जो प्रकृत है,प्रचार उसका नहीं किया जा सकता न होना चाहिये क्योंकी प्रकृतके विरुद्ध हो रहे हैं। "१

आधी रात पृ.९८ मायावती पृ.११८,११७ मायावती
आधी रात पृ.४१-४२ मायादेवी

मायादेवी पाश्चात्य संस्कृतीसे प्रभावित है पर भारतीय विचारधाराका तथा जीवनमें वास्तविकताका महत्व वह जान गई है।

(७) स्वतंत्र विचारवादी :-

मायावती विलायतमें पढी लिखी। अपने होस्टेलमें रहने सिखने वाली, पश्चिमी सभ्यतामें पली, उसमें विश्वास रखने वाली महिला है। वह पुरुषका अधिक समय बर्दाश्त नहीं कर सकती क्योंकि,

" मुझे किसी पुरुषके मुखसे सुनना इतना अपमानजनक सुनना होगा "। -

ऐसा वह कहती है। वह पुरुष प्रधान-सी मानसिकता नहीं है वह स्त्री का महत्व अटूट रखना चाहती है। पुरुषोंकी सीरी बकवास मुझे पसंद नहीं है।

प्रवाही वक्ता :- (८)

मायावती अच्छी तरहसे सदन सामने कई घंटों बोल सकती है व्याख्यान भी दे सकती है। तत्वज्ञान बता सकती है। सुना सकती है। स्वयं राधाचरण का कहना है कि,

"स्त्रीके मुखसे मुझे इतना बडा व्याख्यान सुनना पडा। - १

मायावती शिक्षित है। विचारवंत महिला है। इसीकारण व्याख्यानभी दे सकती है।

(९) मानवतावादी :-

मायावतीका विश्वास है कि विचार द्वेष, लोभ, जलन, आदीके बंधनोंसे अगर हम दूर जाते हैं तो मनुष्यतासे दूर हम देवत्वमें, अच्छी बातोंकी ओर जाते जा सकते हैं। पर मानवके अपनी नीच वृत्तियोंको छोड देना और अच्छा विचार करना आवश्यक है। उसके सिवाय मानवतावादी दृष्टी नहीं आ सकती।

" विचार का बंधन छूट जाय, हमारी मनुष्यताकी कमी मिट जाय,

आधी रात पृ.33 मायावती
आधी रात पृ.32 राधाचरण

उसके बाद देवत्व हमारे लिये है। --४५-- १

(१०) प्रेम भावना :-

मायावती प्रेमिका है। वह सब कुछ अंध होनेसे सबसे पहले प्रकाशचंद्रकी प्रेमिका है। उसे वह सबसे, जितना जानसे चाहती है। प्रकाशचंद्र भी उससे उद्विग्न हो उठा है। और मायावती से वह विवाहका विचार करता है। मायावती किसी भी हालतमें इस बातको संमती नहीं देती। क्योंकि वह जानती है कि प्रकाशचंद्रकेही कारण जीवन चल रहा है। प्रेमिका अपने प्रेमकी तीव्र भावनामें जुदाई नहीं चाहती। मायावती भी विरह सहन नहीं कर सकती।

" विरहका भय होता मुझे। तुम्हारेहि सहारे जीवन चल रहा है। नहीं तो अबतक तो।"

(११) भ्रमावस्था :-

प्रकाशचंद्र राधाचरण तथा मायावती इनमें वार्तालाप हो रहा है। राधाचरण प्रकाशचंद्रको अंदर लेते हुए बाहर जानेकी बात करता है। पर मायावतीका कहना अलग है। राधाचरण पेड के नीचे बजनेवाली बाँसुरीके ठिकाने पर जाना चाहता है। और मायावती मन-मनमें आशंका होती है कि कहीं प्रकाशचंद्र बीचहीमें उसे छोड देगा। क्योंकि अब अगर प्रकाशचंद्र उसे छोड देता है तो मायावती कहींकी भी रहती नहीं। या वह डरतीभी रहती नहीं। या वह डरती भी है कि अब वह क्या करे? क्या न करे?

" तो तुम मुझे सचमुच छोड दोगे?

स्त्री आश्रय चाहती है। और मिला हुआ आश्रय वह खोना नहीं चाहती क्योंकि वह कहीं फिरसे भटकना नहीं चाहती। मायावतीभी एक प्रेमिका है। प्रेमीके बारेमें उसे आशंका पैदा होती सहज बात है।

आधी रात पृ.५१ मायावती
आधी रात पृ.७२ मायावती

(१२) उद्विग्नता :-

राघवशरण भी किनारे बाँसुरी सुनता है। तथा मायावती से कहता है कि जहाँ से बाँसुरी की आवाज सुनाई पड़ती है वहाँ कोई नहीं है। राघवशरण मायावती को चिढ़ाना चाहता है। और उससे कहता है कि किसी वक्त वह उससे विवाह बद्ध हुई थी। मायावती उद्विग्न हो उठती है।

" अभी नहीं। कोई पुरुष पैदा नहीं हुआ जिसके साथ मेरा - मेरा विवाह होता - - "

वास्तव में उसका विवाह हुआ है पर मायावती मजबूर है।

(१३) मानसिक घुटन :-

प्रकाशचंद्र मायावती के वार्तालाप से पता हुआ है कि, उसका मन ऊब गया है। उसके मन पर बोझ तथा भारी बोझ है। प्रकाशचंद्र मनुष्यता से दूर गया है। प्रकाशचंद्र मनुष्यता से दूर गया है और इसी लिये वह मनुष्यता की बातों से दूर है। इस वक्त पर मायावती के मन में अनोखा सोच आता है। वह सोचती है कि शायद कल वह मर भी जायेगी और इसी विचार से उसके मन का बोझ भारी बन बैठता है।

"मेरा बोझ जो बढ़ गया है। आज की रात : - कल तो अब तक " -

(१४) हेय भावना :-

मायावती का कहना है कि स्त्री से प्रेम तो जरूर करती है पर सबकुछ निबाह जाने पर भी स्त्री की कोई कीमत नहीं रखी जाती। वह सिर्फ कर्तव्य ही करती है। जिसे कोई पुरुष ध्यान में नहीं रखता। न रखना चाहता। है। वे यह भी भूल जाते हैं कि स्त्री ने सेवा की है। निस्वार्थ सेवा।

आधी रात पृ.३८ मायावती
आधी रात पृ.१०९ मायावती

मायावती को काफी आहत होना पड़नेसे वह पुरुष जातीको अच्छी तरहसे समझ गई है। क्योंकि पुरुष सिर्फ अधिकार जताते हैं। स्त्रीयोंपर उनके हृदयपर उनके पूर्ण व्यक्तित्व पर। मायावतीके इस कटु अनुभव के कारण उसकी पुरुषोंसे द्वेष भावना बढ़ जाती है।

" हुआ तो ऐसाही -- लेकिन कारण तुम्हारे पुरुष - समाज की वह मनोवृत्ति थी जिसमें स्त्री के लिये न तो कोई अधिकार था और न कोई कर्तव्य। इसीका - इसीकी प्रतिक्रियामें मेरा सब कुछ बिगड़ गया। और अभी पता नहीं और कितनी स्त्रियोंका बिगड़ना -- [1]

मायावतीने राजेश्वरकी बुराईका और अहंकारका भांडा फोड़ दिया है। वह उससे पूर्णता द्वेष करती है। नफरतसे उसका मन भर गया है। जीवनका एक प्रवाह समाप्त होनेपर होश आ जायेंगे पर जबतक राजेश्वर अपना पाप छिपाते हैं सच्चाई बताते नहीं, तबतक उसका व्यक्तित्व द्वेष करने लायकही है। उसके इस बुरे गुणोंकाही मायावती द्वेष करती है।

" अपने कही देखिए, महोदय, दूसरोंके लिये आशा हो सकती है, लेकिन इस तरहके लौट जानेपर आप कहाँ रहेंगे ? है कुछ पता ? " -- [2]

(१५) अग्नि- पश्चाताप वेदना :-

मायावतीका विवाह पाश्चिमात्य पद्धतीसे हुआ है। भारतीय पद्धती-अनुसार पती - पत्नी प्रेमी बनते हैं। पर मायावतीने अभारतीय पद्धतीसे विवाह किया है। जिस विवाहमें डाईवर्स व्यक्तिगत भिन्नता, संदेह, पुरुषके प्रति प्रतिहिंसा है। बच्चे पैदा न हो यह भावना है।

मायावती पश्चिमी विचारोंको अपनाते जाता रहनेसे बावजूदभी वह पश्चातापसे भरी जा रही है। कि ऐसा विवाह उसने क्यों किया? इसी कारण वह पश्चातापकी अग्नीमें निराशावनमें भटक जाती है।

१ आधी रात पृ.११८ मायावती
२ आधी रात पृ.३७ मायादेवी

मायावती का कहना है कि, उसने प्रकाशचंद्रसे प्रेम किया तथा उसमें हमेशा पुरुषत्व देखनेकी कोशिश की। पाँच वर्षों वह मोहमें पड़ी रही। और अचानक उसका वह सपना टूट गया। मुझे अब पछतावा होता है कि, सपने सपने होते है। जो बनतेभी हैं। और टूटतेभी हैं। लेकिन मुझे अब पश्चातापभी होता है कि पुरुषत्व हीन आदमीसे उसने प्रेम किया जिसका कोई फायदा नहीं था।

" हाँ देख तो लिया और मुझे निराश होना पड़ा। इधर पाँच वर्षोंतक जिस मोह - स्वप्नमें पड़ी थी, वह एकाएक टूट गया लेकिन मुझे कोई चिंता नहीं। मेरा प्रयोग पूरा हो गया। " --- ४

(१८) आत्मसंतुष्टी :-

मायादेवीने हमेशा परिस्थितीसे समायोजन किया। जिस परिस्थितीमें वह रहती गई। अपने आपको - स्वतःपर ठीक तरह निभा लिया। मायादेवी मानती है कि मानवको जितनाभी मिलता है, जोभी मिलता हैं, उसमें उसे समाधानी रहना आवश्यक है।

" मैं तो सुखी रही - इससे अधिक मैं कुछ और चाहतीही नहीं थी। "

(१७) दैववादी :-

प्रकाशचंद्रने मायावतीके मनके विचार व्यक्त होते हैं कि, जीवनमें नियती का खेल चलता रहता है। नियतीके विरोधमें हम भागके बच नहीं सकते। कुछ साल पहले हम क्या थे? आज क्या है? ये सब बातें भाग्यकीही हैं।

हमें विश्वास नहीं आता कि, इतनी पढ़ी लिखी मायावती भाग्यपर कैसे निर्भर रह सकती है। पर अब सोचते है कि, निराशावादसे भरे अनुभवोंसे ही मायावती भाग्यवादी बन गई।

" हम लोग चाहते तो नहीं लेकिन हम नियतिके विरोधमें इससे बच नहीं सकते। " -- १

आधी रात पृ.९० मायावती
आधी रात पृ.८८ मायावती

(१८) वैराग्यवाद :-

मायादेवीका विचार है कि, प्रकाशचंद्र तथा मायावती एक साथ रह नहीं सकते। सबकुछ अच्छी बुरी बातें समझ जानेके बादभी एक दूसरेके साथ ठीक तरहसे रह सकते हैं। पर देवताके बात कुछ ऐसी हुई है कि, व्यक्तित्व मिटाकर जीवनको विराट इतिहासमें जब चले जायेंगे तब और बात होती है। पर मायादेवीका इतिहास तो विरागसे भरा हो उसमें कोई बदल होनेकी अपेक्षा नहीं है।

मायावती अपने जीवनमें विरागसे सामना करते आई है। पर उसी कारण वह कहती है कि अब उसका इतिहास कोई क्या सोचे, क्या पूछे।

" हम लोग एक साथ नहीं रह सकते। हम दोनोंका इतिहास कुछ ऐसा है - तुम तो अपना व्यक्तित्व मिटा कर संसारके विराट जीवन और विराट व्यक्तित्वमें मिल जाओगे। तुम्हारा इतिहास। मेरे लिये तो अब कोई आशा नहीं है ? " - १

(१९) पुनर्जन्मपर विश्वास :-

मायावती पुनर्जन्मपर विश्वास रखती है। पूर्व कर्मोंके अनुसारही हमें भोग भोगना पड़ता है। जैसे कर्म होते हैं वैसे फल मिलते हैं। ऐसा मायावती जानती है।

" पूर्वजन्मके कर्मोंके अनुसार हमें फिर जन्म लेकर उसका भोग भोगना पड़ता है। यही तो हमारा वैज्ञानिक सत्य है। " - - १

परिस्थितिसे मनुष्य बनता बिगड़ता है। उसकाही परिणाम मायावतीके मनपर हुआ है। और वह अंतर्मुखी बन बैठी है।

प्रकाशचंद्रके पुनर्जन्मपर मायावतीका विश्वास है। वह चाहती है कि वह दूसरा जन्म ले सकती है तथा दूसरे जन्ममेंभी उसके साथका विचार करती है।

" मेरा दूसरा जन्म - और तुम्हारी चिंता शायद दूसरे जन्म मेंभी बनी रहेगी। "

आधी रात पृ.९९ मायादेवी
आधी रात पृ.११० मायावती

AKR. BALAS... ...KAR
SHIVAJI UNIV... ...UR

मायावती अंधश्रद्धाके कारण पुनर्जन्मपर विश्वास नहीं रखती तो वह भारतीय विश्वासोंपर श्रद्धा रखती है। इसलिये पुनर्जन्मपर विश्वास है।

मायावती स्पष्ट कर देती है कि, मायावतीका विवाह प्रकाशचंद्र से हुआ है। इसका अस्वीकार न करे क्योंकि मेरे दूसरे जन्म की आशा है। अर्थात उसका विवाहभी और दूसरे जन्ममें रहेगा। उसका विश्वास है कि उसके मनकी इच्छाके अनुसार ही या संस्कारोंके अनुरूप ही उसका दूसरा जन्म होगा। अगर वह विवाहकी प्रकाश चंद्रको अमान्य है तो दूसरके जन्ममें वह क्या करेगी ?

"मेरे दूसरे जन्मकी जो आशा है, जिसके सहारे मुझे इस जीवनसे छुट्टी लेनी है। यह तो मानते हो कि, इस जन्म के संस्कारोंके" अनुरूपही मेरा दूसरा जन्म होगा।

(२०) अंधविश्वास :-

मायावती शिक्षी पढी है। पर अंध रुढियाँ तथा अंध विश्वासोंपरभी अपनी श्रद्धा रखती है। उसे विश्वास हो गया है कि पुनर्जन्म जैसा है वैसाही प्रेतात्माभी होता है।

मायावतीका इस विचारके पीछे कुछ तर्कसा है। वह परिस्थितिके कारण ही इन बातोंकी ओर सोच करती है। राधाकृष्णको यह बात खटकती है।

" तो तुम पुनर्जन्मके साथही साथ प्रेतात्माओंमें विश्वास करती हो। -- ?

राधाकृष्णसे वह कहती है कि उसका पहला प्रेमी जो मर चुका है प्रेत बनकर उसका पीछा करता है। क्योंकि वह अकालही मरा था।

"मैं समझ रही हूँ। उसकी अकाल मृत्यु हुई थी। वह प्रेत होकर मेरा ध्वंस कर रहा है। उसकी लालसा उसके साथ जो रह गई। --- २

आधीरात पृ.११३ मायावती
आधीरात पृ.८२ मायावती

(२१) दृढनिश्चयी :-

राजशेखरको समझमें आता है कि माया प्रेम करती है। और वह उससे कहता है कि अब वह प्रेम यहीं समाप्त कर दो। मायावतीका कहना है कि, हर्गिज नहीं। उसका कहना है कि वह राजशेखरसे न प्रेम करती है न उसे वह चाहती है। वह प्रकाशचंद्र से ही प्रेम करती है करती रहेंगी। इसी निश्चयपर वह अडिग है तथा निश्चय नहीं बदलेगी। यह इसलिये कि मायावती प्रकाशचंद्रको सचमुच चाहती है। स्त्री जब किसीसे एक बार प्रेम करती है। उसके निश्चयमें अडिग रहती है।

" हर्गिज नहीं। आपकी आप अपनी ओरसे देखिए। आप कितने भ्रममें पड गये हैं। आप समझते होंगे " - - - १

मायावती समझदार तथा स्पष्ट वक्ता है। इसी लिये निश्चयमेंभी वह दृढतासेही रहती है।

मायावती प्रकाशचंद्रसे कहती है और स्पष्ट कर देती है कि वह अब बिना प्रकाशचंद्रके जीना नहीं चाहती। वह स्पष्ट कह देती है कि वे दोनों साथहि मरेंगे। इस बातसे स्पष्ट है कि मायावती का निर्णय निश्चित है, और वह बदल नहीं करना चाहती। उसका निश्चय दृढ है। इस परसे उसकी दृढ निश्चयी प्रवृत्ती प्रकट होती है। वह सुख और दुखमें साथही रहेंगी।

" हम दोनों साथ ही मरते।
साथ ही मरेंगे। " - - २

२आधी रात पृ.७२ मायावती

(२२) समायोजन :-

मायावती परिस्थितिके साथ समायोजन करना जानती है। उसका स्वभाव समायोजन की प्रवृत्तीसे मिलता जुलता है। क्योंकि जो बहिर्मुखी व्यक्तित्व होता है। वह परिस्थितीसे मिलाप करती है।

" मालती असंख्य मणियोमें अगर एक बार छूट गई दूसरी नयी भी जाएगी। है न ठीक? - - - ?

अगर किसी वस्तुकी कमी हो जाती है तो दूसरी वस्तुके उपस्थितिके आनंद लेना पडता है। यही समा योजन है।

राघवेन्द्र मायावतीके विचारोंमें थोडी भिन्नता होनेके बावजूदभी मायावती यह चाहती है कि जीवनमें समायोजन करना आवश्यक है। मानवको परिस्थितिसे समायोजन करना पडता है। वहाँपर अपनी इच्छा अथवा व्यक्तित्व मिटा डालना चाहता है। जो परमेश्वर आत्मा रूप है वह सर्वत्र समरूपसे व्यक्त हो। मानवकोभी अपने जगतमें व्यस्त रहना ही ठीक है। यहाँपर अपनी इच्छाका कोई स्थान नही है। अर्थात मायावती यह बहिर्मुखी व्यक्तित्वकी उसकी एक झलक दिखती है। परिस्थितिसे वह मेल होनेमेंही जीवनकी सफलता तथा बड़ा मानती है।

" उसकी कोई अपनी इच्छा नही है, उसका कोई अपना व्यक्तित्व नही है, तुमभी अपनी इच्छा अथवा व्यक्तित्व मिटा डालो। वह अपने संसारमें सर्वत्र समरूपसे व्यक्त है - तुम भी अपने जगतमें व्यक्त हो उठो। तुम्हे और क्या चाहिये ?"

(२३) समझदारीकी प्रवृत्ती :-

मायावती शिक्षित महिला है। तथा काफी समझदारभी है क्योंकि वह राघवेन्द्रसे वार्तालाप करते वह स्पष्ट करती है कि उसमें तथा राघवेन्द्रमें समझौता हो जायेगा लेकिन अगर प्रकाशचंद्र उद्विग्न होकर अपने आपको सम्हाल नही पा रहा है तो उसका बोध,करना हमारा कर्तव्य है। वह औरोंकी भलाई सोचती है।

बकि ना का बर्ताव वह दुर्लक्षित करती है। वह प्रकाशचंद्रके बारेमें चिंतीत है।

आधीरात पृ.७७ मायावती
आधीरात पृ.३४ मायावती

" देखिए वह कहाँ जा रहे हैं? उन्हे सम्हालिये। मेरा और आपका तो समझौता हो ही जायेगा। इसमें इतनी जल्दी क्या है? मैं तो यह नहीं कहती कि मैंने उनकी सब ओरसे भलाई कि है। " -- १

मायावती का वर्तन उदारतापूर्वक लगता है। जिसमें समझदारी की पूर्ती दिखती है।

प्रकाशचंद्र और मायावती एकदूसरेको अच्छी तरहसे जानती है। मायावती की अपेक्षा है कि संसारकी छोटी बातें छू नहीं सकेंगी। वह उसकी महानता तथा मनकी उदारता खूब समझती है। वह उसकी निष्काम खूब समझती है। वह उसकी कहती है कि,वह कल्पनासे नवीन और भव्य चरित्रोंका निर्माण होता है। मायावती दूसरोंकी अच्छाई सहन कर सकती है। वह औरोंका बुरा नहीं चाहती। प्रकाशचंद्र जिससे वह प्रेम करती है, उसको प्रेम करनेके कारणही वह प्रकाशचंद्रके बारेमें अच्छी तथा सद्भावना व्यक्त करती है। आदरसे भरी हुई यह भावनाएँ है।

" संसारकी छोटी बातें तुम्हे न छू सकेंगी। तुम्हारी इच्छा निष्काम है। क्योंकि तुम रचयिता है। तुम्हारी कल्पना नवीन चित्रोंका निर्माण कर सकती है। -२

(२४) स्वभाव वैचित्र्य :

मायावती एक तरफ इस प्रकार कहती है। किंतु मरेभी तो प्रकाशचंद्र के साथही। और सारा जीवन उसकी सेवामें बिताना चाहती है। प्रकाशचंद्रके पैरोंको छूकर अपनी पती निष्ठा तथा प्रेम सिद्ध कर देती है। पर थोडीही देरमें वह क्रोधित होती है तथा कहती है कि,उसने शरीर सुखके लिये प्रकाशचंद्रसे विवाह नहीं किया था। बल्कि वह अपने आपको पतिसेवामें लगाये रखना चाहती थी। अपने स्त्रीत्व की सफलता करना चाहती थी। एक तरफ वह मरमिटनेको तैयार है दूसरी ओर वह सिर्फ भागनेके लिये अविवाहका बहाना जोड देती है। यह दोनोंभी बातें मायादेवीका स्वभाव वैचित्र्य सिद्ध करती है। उद्विग्नता या वैराग्यभावके कारण यह,बात माया-वतीके मनमें है। क्योंकि विवाह यह पवित्र बंधन है।

१ आधी रात पृ.५२ मायादेवी
२ आधी रात पृ.७५ मायावती

" केवल तुम्हारे साथ रहने के लिये विवाह किया था। मैं समझती थी इस प्रकार मेरा रिश्ता बिलकुल निष्फल बनायेगा। " -- १

राजशेखरने मायावतीके सामने विचार स्पष्ट किये हैं कि प्रेमके मूलमेंही कल्याण की भावना होनी चाहिए। ऐसा उनका कहना है। पर मायावती कहती है कि, वह तो राजशेखरने समझ नहीं पाये। इसे बातका आश्चर्य राजशेखरको होता है पर मायावतीका स्पष्ट कहना है क्योंकि,उसनेतो कभी प्रेम नही किया। वास्तवमें उसने तो प्रेम किया है। जीवन समर्पण किया है। प्रभाशंकरसे वासना मनसे मिटाकर विश्वास किया है।

" मैंने न तो उन्हें कभी प्रेम किया और न करूँगी ? " -- २

मायावती एक तरफ प्रेममें मर मिटना चाहती है और दूसरी ओर वह प्रेम किया नहीं है। इसका बयान देती है।

(२५) वासना विरहित प्रेम केवल आध्यात्मिक प्रेम :

मायावती अपने विचारोंसे दूर जाकर सोचती है कि,व प्रभाशंकरकी सेवा करती है। वह उसके सन्निसहायिकाके रूपमें रहना चाहती है। न कि पत्नीके रूपमें मातृत्व छोडकर देवत्वकी ओर जब पुन्ती बढ जाती है तब उसके पास कुछ अच्छे गुण भी इकठ्ठा हो जाते है। मायावतीका प्रभाशंकरके प्रति शारिरीक प्रेमही नही है तो वासना ओंकी पूर्तीका प्रश्नही नही बनाता।

मायावतीका प्रेम है जरूर पर वह अशारिरीक प्रेम है। शारिरीक इच्छाओंकी पूर्तिसेभी परे है।

"छोड सकते हो यहाँका रहना और मुझको। मैंतो केवल तुम्हारी सेवा, तुम्हारे दुःखमें तुम्हारी सेवा,तुम्हारे दुःखमें तुम्हारो सहायिका रूपमें रहना चाहती थी। जिस दिन तुम अपनी मनुष्यता छोड कर देवत्वकी ओर बढो मैं स्वतः छुट जाउंगी। इसके लिये कोई आयोजन नहीं करना पडेगा। " -- १

आधी रात पृ.१२१ मायावती
आधी रात पृ ७८ मायावती

(२८) आधुनिक विचार धारा :-

मायादेवी स्वयं मान्यता देती है कि आधुनिक सभ्यताके देशोंमें वासना और उन्मादकी भरा पड़ा है। नारी स्वतंत्रता तथा नारी समस्या आदि आन्दोलनोंके प्रश्न भी उन देशोंमें चल रहे हैं। पर मायादेवी भी अंग्रेजी पढ़ी लिखी लड़कियोंके अनुसार सभी बातोंका विचार अनुभव किया है। उन्हें मायावती कोईभी गलत प्रकार नहीं मानती। क्योंकि वह उनकी भिन्न विचारधारामें बह गई है।

"कुछ नहीं। वहती अन्तेवास को जवानीकी वासना और उन्मादको अंग्रेजी पढ़ी सभी लड़कियोंकी तरह मैंभी नारी – स्वतंत्रता और नारी समस्या कह कर दुनिया का दिखावा देना चाहता।"

मायादेवी नये युगकी माँके अनुसरणसे विचारोंका स्वागत करती है तथा आदर्श एवं विकास का विचारभी करती है। और उनका विचारभी स्पष्ट है कि, आधुनिक युगमें इन बातोंकी आवश्यकता है।

"स्त्रीत्वका आदर्श और विकास अपनी भिन्नता मिटा कर पुरुषों तक जा सकता है। नये विचारों और इस युगकी कुछ अवस्थामें संस्कार प्रकट हो चुकी थी।" -- २

(२७) मरणप्रवृत्ति :-

जीवनके नहीं तरफदारको उनकी आँखे देखनेकी वृत्ती आशा देवीमें है। वह अब जीवनसे और मौतसे भी हार गई है। जीवनदान अब मौतके अलावा कहीं चैन नहीं मिल सकता। मानव जब जीवनमें अधिक दुःख पाता है तो अधिक देर जीना नहीं चाहता। जीनेकी आशा खत्म होती है तथा मरनेकी वृत्ती बढ़ जाती है। वह स्वयंको खत्म करना चाहता है।

१ आधी रात पृ.७५ मायावती
२ आधी रात पृ.९४ मायावती

मायावती का कहना है कि अगर वह मर जाती है तो शायद उसके मनका बोझ हलका बन जाये।

मायादेवी इन्हीं बातोंसे छुट्टी चाहती है। मुक्ति चाहती है। जीवनकी दुःखपूर्ण बातोंसे वह दूर जाना चाहती है। शायद इसके या आत्महत्यासे उसे चैन मिले।

" आत्महत्या। जानती हूँ इस प्रकारसे मैं मुक्त तो नहीं बनूँगी। मेरा बोझ और अधिक बढ़ जायेगा। लेकिन यह जीवन शायद इसी लिये था। " -- १

१. आधी रात पृ.५८ आकाशदेवी

अध्याय पाँचवाँ, उपसंहार.

मराठी नाटककार विजय प्रतिभावान नाटककार हैं। आपने बी.ए.तक पढ़ाई की। इनका व्यक्तित्व प्रखर एवं प्रभावी है। आप प्रगतिशील लेखक हैं। भारतीय संस्कृति का अध्ययन भी गुणात्मक है। तेंडुलकर के प्रसिद्ध नाटक अनेक हैं। इन नाटकों का वर्गीकरण कई ढंग से किया जा सकता है। तेंडुलकरके नाटक समस्याप्रधान नाटक हैं। प्रेम और विवाह के विभिन्न पहलुओंपर प्रकाश डाला गया है। इनके नाटक चर्चित किये जाते हैं।

बीसवीं शताब्दी में मनोविज्ञानको विशेष प्रधानता मिली है। इस मनोविज्ञान को लेकर कई संप्रदाय निकले। इस क्षेत्र में फ्रायड,युंग का योगदान महत्वपूर्ण है। साहित्य के अध्ययनमें मनोविज्ञान का सहारा लिया जा रहा है। मनोविज्ञानके कारण साहित्यकी समझमें सुविधा हो रही है। मनोविज्ञानसे हिंदीके नाटकोंकी प्रवेश पायी है। इस दृष्टिसे नाटकोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन ˚ अत्यंत उचित हो रहा है।

भारतीय संस्कृति एक महत्वपूर्ण संस्कृति है। वास्तवमें समाजकी एक धरोहर है। भारतीय संस्कृतिमें नारीका विशेष स्थान है। नारी समाजकी महत्वपूर्ण अंग होने के नाते नाटकोंमें स्थान है। समाजमें नारीका विवाह आवश्यक एवं महत्वपूर्ण संस्कार है। अतएव नाटकमें इस समस्या,अभिव्यक्ति होती है। नारी जीवनके मूल्योंके लिए मनोविज्ञानका ज्ञान बहुत उपयोगी है।

हम देखते हैं कि तेंडुलकरके नारी पात्रोंमें निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं।

१) नारी मुक्त भावना
२) मानसिक कुंठाग्रस्तता
३) स्वच्छंदता
४) भारतीय नारीत्व
५) आधुनिक विचारधारा
६) व्यवहार कुशलता
७) स्वार्थी एवम् निरर्थक प्रवृत्ति